International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

हरियाणा विधानसभा चुनाव – 2014 के मतदान व्यवहार का अध्ययन

Archna
Research Scholar
Department of Political Science
Baba Mastnath University, Rohtak (HR.)

शोध आलेख सार– वस्तुतः मतदान व्यवहार को लेकर भारत में अनेकों शोध कार्य हो चुके हैं और प्रत्येक चुनाव के पश्चात् यह कार्य पुनः किया जाता है। इसी के दृष्टिगत हरियाणा राज्य में 1967 के चौथे आम चुनाव के बाद से लेकर 2014 के विधानसभा चुनाव तक विभिन्न शोधकर्त्ताओं द्वारा मतदान व्यवहार को लेकर शोध कार्य सम्पन्न किए गए हैं। इससे हरियाणा की चुनावी राजनीति के बदलते स्वरूप को समझने में राजनैतिक विद्वानों को आसानी रही है और भावी चुनावी राजनीति के सन्दर्भ में रणनीति तैयार करने में तथा मतदाताओं को अपनी पार्टी विशेष की तरफ झुकाने के उद्देश्य से घोषणा पत्र तैयार करने का कार्य भी किया जाता रहा है। वर्ष 2014 में हरियाणा विधानसभा का चुनाव अपने आप में एक अनोखा चुनाव था जिसने प्रथम बार हरियाणा की धरती पर कमल को खिलने का अवसर दिया और निरन्तर 10 वर्षों से सत्तारूढ कांग्रेस पार्टी का सफाया कर दिया। प्रस्तुत शोध पत्र में हरियाणा विधानसभा चुनाव 2014 के सन्दर्भ में परिवर्तित मतदान व्यवहार का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

मूलशब्द– चुनावी राजनीति, मतदान व्यवहार, विधानसभा चुनाव, कांग्रेस पार्टी, भारतीय जनता पार्टी, जातिवाद, भ्रष्टाचार, चुनावी विश्लेषण।

भूमिका– चूंकि क्षेत्रफल की दृष्टि से हरियाणा भारत का 20वां राज्य है। इसकी स्थापना 1 नवंबर 1966 को हुई थी और यह भारत का 17वां राज्य बना था। यहां एक सदनीय विधानमण्डल है जिसे विधानसभा कहा जाता है और इसके निवार्चित सदस्यों की संख्या 90 है। हरियाणा से लोकसभा के लिए 10 तथा राज्यसभा के लिए 5 सदस्य निर्वाचित होते हैं। अपने अस्तित्व के बाद हरियाणा को पं0 भगवत दयाल शर्मा के रूप में प्रथम मुख्यमंत्री मिला और 1970 के दशक में बंसीलाल के नेतृत्व में हरियाणा में क्रांतिकारी सरकार बनी

जिसने 1970 में हरियाणा के सभी गांव में बिजली की सुविधा प्रदान की। इसके बाद हरियाणा की धरती '**लालों की राजनीति**' का पर्याय बन गई। इस सन्दर्भ में बंसीलाल के बाद, भजनलाल, तथा देवीलाल ने हरियाणा की राजनीति को नये आयाम दिये। इन तीनों लालों के कारण ही हरियाणा की राजनीति अपनी इस पहचान को कायम कर पाई। चूंकि भजनलाल के कार्यकाल में हरियाणा 'आयाराम–गयाराम' की राजनीति के रूप में बदनाम हो गया और दलबदल की बीमारी हरियाणा की राजनीति में आ गई। परन्तु 2005 तथा 2009 के विधानसभा चुनाव में श्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा को सरकार की कमान मिली और हरियाणा की राजनीति को लालों की राजनीति से छुटकारा मिल गया।

चूंकि 2005 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस को 67 सीटे मिली थी जो 2009 के विधानसभा चुनाव में घटकर 40 रह गई। इस समय इनेलो की स्थिति भी 31 सीटों तक ही सीमित हो गई और कांग्रेस ने हरियाणा जनहित कांग्रेस के विधायकों को मिलाकर पुनः 2009 में सरकार गठित की और हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा बने। परन्तु 2014 में हुए हरियाणा विधानसभा चुनाव में कांग्रेस तीसरे स्थान पर खिसक गई और भारतीय जनता पार्टी ने 47 सीटें जीतकर श्री मनोहर लाल खट्टर के नेतृत्व में सरकार गठित की जो निरन्तर कार्यरत्त है।

तालिका– हरियाणा विधानसभा चुनाव 2014 में दलीय स्थिति

क्र.सं.	पार्टी का नाम	सीटें
1	भारतीय जनता पार्टी	47
2	इनेलो व सहयोगी	20
3	कांग्रेस पार्टी	15
4	हरियाणा जनहित कांग्रेस	02
5	निर्दलीय व अन्य	06
	कुल	90

(स्रोत– दैनिक भास्कर, 20 अक्तूबर 2014)

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

इस तालिका का विश्लेषण करने से पता चलता है कि 2014 के हरियाणा विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी ने 47 सीटें जीतकर एक रिकार्ड कायम किया। निरन्तर 10 वर्ष से सत्तारूढ कांग्रेस पार्टी मात्र 15 सीटों पर सिमट गई और तीसरे स्थान पर रही। इस चुनाव में इनेलो भी अपने सहयोगी दलों के साथ 20 का आंकड़ा ही छू पाई। हजकां को भी 2 सीटें मिली तथा निर्दलीय 6 सीटें जीतने में कामयाब रहे।

दलबदल– हरियाणा विधानसभा चुनाव 2014 के समय दलबदल भी बड़े पैमाने पर हुआ और पुनः हरियाणा आयाराम–गयाराम की राजनीति के लिए पहचाना गया। चुनाव से पहले ही कांग्रेस के 26 नेताओं ने पार्टी छोड़ी और हजकां के भी 22 नेताओं ने पार्टी से किनारा कर लिया। इसमें इनेलो भी पीछे नहीं रही तथा उसके 12 नेता पार्टी छोड़कर चले गए। कुर्सी पाने की चाहत में कई दलबदलुओं ने तो निर्दलीय चुनाव लड़े और कई दलबदलू भारतीय जनता पार्टी में शामिल हुए। परिणामस्वरूप हरियाणा में इस बार दलबदल का लाभ भारतीय जनता पार्टी को हुआ। परन्तु दलबदलुओं के लिए यह चुनाव अधिक सुखद परिणाम देने वाला नहीं रहा और 45 दलबदलुओं में से केवल 5 ही जीत पाए। इस चुनाव में हरियाणा के मतदाताओं ने दलबदलुओं को पहली बार ऐसा सबक सिखाया कि भविष्य में दलबदल करने वाला कोई भी विधायक हजार बार सोचेगा।

महिला सशक्तिकरण– हरियाणा में महिला सशक्तिकरण की दिशा में ऐसे प्रयास पहले कभी नहीं हुए थे जो इस अवसर पर देखने को मिले। चूंकि महिला आरक्षण विधेयक आज भी संसद में विचाराधीन है और अधिकांश पार्टियां महिलाओं को टिकट देने से बचती रही हैं, परिणामस्वरूप महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी का स्तर संसद तथा विधानमण्डलों में काफी कम रहा है। यदि हरियाणा की राजनीति के सन्दर्भ में देखा जाये तो हरियाणा के राजनैतिक इतिहास में प्रथम बार 116 महिलाओं ने चुनाव लड़ा और उनमें से प्रथम बार सर्वाधिक 13 महिलाऐं विधायक बनी। 1996 में केवल मात्र 93 महिलाओं ने ही चुनाव लड़ा था और केवल 4 ही विधायक बनी थी। इसी तरह वर्ष 2000 में 49 में से 4 तथा 2005 में 68 में से केवल 11 विधायक बन पाई थी। इस दृष्टि से वर्ष 2014 का हरियाणा विधानसभा चुनाव महिला सशक्तिकरण की दृष्टि से सुखद परिणाम देने वाला रहा। फिर भी जनसंख्या

की दृष्टि से महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी आज भी हरियाणा तथा अन्य राज्यों में अत्यन्त कम है जो राजनैतिक विश्लेषकों के लिए एक चिन्ता का विषय है। अतः संसद में विचाराधीन महिला आरक्षण विधेयक को पास करके महिलाओं की राजनैतिक सहभागिता का स्तर बढाया जाये ताकि उनका राजनैतिक सशक्तिकरण हो सके। इस दिशा में सभी राजनैतिक दलों को मिलकर कार्य करने की आवश्यकता है।

मतदान व्यवहार– मतदान व्यवहार की दृष्टि से हरियाणा विधानसभा चुनाव 2014 एक अनोखापन लिये हुए था। प्रथम बार हरियाणा के मतदाताओं ने जाति व धर्म के तत्वों से उपर उठकर विकास और सुशासन के मुद्दे पर वोट दिया। इस चुनाव में 1,62,60,139 मतदाताओं ने मतदान किया और मतदान का झुकाव भारतीय जनता पार्टी के पक्ष में रहा। जिसके परिणामस्वरूप जाति व धर्म के विपरीत मोदी फैक्टर को ध्यान में रखते हए हरियाणा के मतदाताओं ने विकास के नाम पर वोट दिया। इस चुनाव में युवा मतदाताओं की भूमकिा महत्वपूर्ण रही और इस चुनाव ने हरियाणा की परम्परागत राजनीति के परिदृश्य को ही बदल डाला। इस चुनाव में मतदान व्यवहार का स्वरूप इस प्रकार रहाः–

1. **जातिवादः** हरियाणा जातिवादी की राजनीति के लिए बदनाम रहा है। भारत की परम्परागत राजनीति भी जातिवाद की भाषा ही समझती है। जयप्रकाश नारायण ने तो जाति को एक महत्वपूर्ण राजनैतिक दल माना है। जाति की राजनीति के बिना कोई भी व्यक्ति अपनी राजनैतिक पहचान कायम नहीं कर सकता। परन्तु इस चुनाव में जाट बहुल क्षेत्र में भी इनेलो की बजाय भारतीय जनता पार्टी के पक्ष में मतदान हुआ। कांग्रेस ने जाट आरक्षण की राजनीति का मुद्दा भी उठाया फिर भी उसे कोई लाभ नहीं मिला। चूंकि भारतीय जनता पार्टी ने मुख्यमंत्री पद का कोई भी उम्मीदवार घोषित नहीं किया था और इसका लाभ भी भारतीय जनता पार्टी को हुआ। चुनाव से पहले राजनैतिक विश्लेषकों ने कयास लगाए थे कि हरियाणा में चुनाव के बाद कोई जाट नेता ही मुख्यमंत्री बनेगा। लेकिन ये भविष्यवाणी गलत सिद्ध हुई और गैर–जाट नेता श्री मनोहर लाल खट्टर को मुख्यमंत्री बनाकर जातिवाद की राजनीति को गहरा आघात पहुंचाया गया। इस तरह वर्ष 2014 का हरियाणा विधानसभा चुनाव जातिवाद के विपरीत परिणाम देने वाला रहा।

2. क्षेत्रवाद– भारत के अन्य राज्यों की तरह हरियाणा भी क्षेत्रवाद की राजनीति का गढ रहा है। लालों की राजनीति पश्चिमी हरियाणा के विकास तक ही सीमित रही है। यह प्रथम अवसर था जब हरियाणा की जनता ने क्षेत्र की बजाय राष्ट्रीय महत्व के मुद्दों पर ध्यान दिया और मोदी फैक्टर के तहत राष्ट्रीय समस्याओं को ध्यान में रखकर देशहित में मतदान किया। क्षेत्रवाद की राजनीति करने वाली इनेलो तथा हजकां सहित अन्य क्षेत्रीय दलों को इस चुनाव में हार का सामना करना पड़ा।

3. परिवारवाद की राजनीति– इस चुनाव ने परिवारवाद की राजनीति को गहरा आघात पहुंचाया। भजनलाल, बंसीलाल तथा देवीलाल जैसे परिवारों के दिग्गज नेताओं को भी इस चुनाव में मुंह की खानी पड़ी। नरेन्द्र मोदी ने भारत की राजनीति से परिवारवाद को खत्म करने का जो वायदा किया था, उसका असर हरियाणा विधानसभा चुनाव में भी देखने को मिला। कई परिवार तो अपनी राजनैतिक विरासत बड़ी मुश्किल से बचा सके। बंसीलाल की विरासत उनकी पुत्रवधू ने बचाई परन्तु जिन्दल परिवार इसमें नाकाम रहा। भारतीय जनता पार्टी के पक्ष में होने वाले मतदान ने परिवारवार को बिखेर दिया और लालवाद की राजनीति अपना वोट बैक खो बैठी। कांग्रेस में पूर्व मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा अपनी राजनैतिक साख बचाने में सफल रहे और उनके नेतृत्व में पार्टी उनके गृहक्षेत्र में रोहतक विधानसभा सीट को छोड़कर सारी सीटें जीत गई।

4. विकास और सुशासन– इस चुनाव में हरियाणा में भारतीय जनता पार्टी की तरफ से विकास और सुशासन का नारा दिया गया। केन्द्र में लम्बे समय तक कांग्रेस द्वारा किये गए भ्रष्टाचार का खामियाजा हरियाणा कांग्रेस को भी भुगतना पड़ा। यद्यपि कई राजनैतिक दलों ने श्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा पर मुख्यमंत्री रहते हुए नौकरियों में भ्रष्टाचार व भेदभाव के आरोप लगाए परन्तु इसका फायदा न तो इनेलो को मिला और न ही हजकां को मिला। केन्द्र में 10 वर्ष तक कांग्रेस के कार्यकाल में होने वाले भ्रष्टाचार ने हरियाणा के मतदाताओं को भारतीय जनता पार्टी के पक्ष में मतदान करने को विवश कर दिया।

5. सोशल मीडिया– इस चुनाव में भारतीय जनता पार्टी ने सोशल मीडिया का भरपूर प्रयोग किया। यद्यपि अन्य राजनैतिक दलों ने भी इसी नीति पर कार्य किया, परन्तु भारतीय

जनता पार्टी का सोशल मीडिया तंत्र हरियाणा के मतदाताओं को आकर्षित करने में अधिक सफल रहा और प्रथम बार हरियाणा में 47 सीटों के साथ भारतीय जनता पार्टी के पक्ष में स्पष्ट जनादेश प्राप्त हुआ।

6. धन की भूमिका– इस चुनाव में धन की भूमिका कमजोर हुई। हरियाणा के मतदाताओं ने अटेली विधानसभा से चुनाव लड़ रहे सबसे अमीर व्यक्ति रवि चौहान को तीसरे नंबर पर पहुंचा दिया। इसी तरह हरियाणा के अमीर घरानों के प्रत्याशी सावित्री जिन्दल, गोपाल कांण्डा, विनोद शर्मा तथा उनकी पत्नी भी चुनाव हार गए। इस तरह हरियाणा के मतदाताओं ने स्पष्ट कर दिया कि उन्हें खरीदा नहीं जा सकता। इसके विपरीत मतदाताओं ने अपने विवेक का प्रयोग करते हुए देश हित में भारतीय जनता पार्टी के पक्ष में मतदान किया।

7. मोदी फैक्टर– यह प्रथम अवसर था जब हरियाणा के मतदाताओं ने केन्द्र की राजनीति के रूझान को देखते हुए भारतीय जनता पार्टी को वोट देने का मन बनाया। अब तक भारतीय मतदाता गठबंधन सरकारों की कार्यप्रणाली से इतने ज्यादा तंग आ चुके थे कि वे एक स्थिर व स्थायी सरकार चाहते थे। उन्हें श्री नरेन्द्र मोदी में एक ऐसा व्यक्ति दिखाई दिया जो देश को विकास के मार्ग पर ले जा सकता था और देश को भ्रष्टाचार व मंहगाई से मुक्ति दिला सकता था। इसी कारण हरियाणा के मतदाताओं ने नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में विश्वास व्यक्त करते हुए हरियाणा में भी भारतीय जनता पार्टी को वोट दिया।

सारांश– इस तरह हरियाणा विधानसभा चुनाव वर्ष 2014 में मतदान व्यवहार का परिवर्तित स्वरूप दिखाई दिया। इस चुनाव में जाति, धर्म, धन बल, बाहुबल, परिवारवाद आदि की अपेक्षा हरियाणा के मतदाताओं ने विकास और सुशासन के मुद्दे पर मतदान किया। इस चुनाव में भारतीय जनता पार्टी को प्रथम बार हरियाणा के मतदाताओं ने वोट देकर सरकार बनाने का अवसर दिया। इस चुनाव में सोशल मीडिया की भूमिका महत्वपूर्ण रही और हरियाणा के मतदाताओं की जागरूकता का स्तर काफी अधिक रहा। फिर भी हम इस बात से इंकार नहीं कर सकते कि वर्तमान सरकार के सामने अनेकों चुनौतियां हैं, अतः श्री

मनोहर लाल खट्टर के नेतृत्व में हरियाणा के मतदाता अपेक्षा करते हैं कि सरकार अपना कार्यकाल पूरा करेगी और मतदाताओं की अपेक्षा पर खरा उतरेगी।

सन्दर्भ सूची–

1. रघुकुल तिलक, **लोकतंत्रः स्वरूप एवं समस्याएं,** उत्तरप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, लखनऊ, 1972.
2. पदमनाथ शर्मा, **भारत में निर्वाचन राजनीति**, एस. एण्ड संस, दिल्ली, 1993.
3. राजेश्वर लाल, **भारतीय लोकतंत्र के संकट,** साहित्य संसद, नई दिल्ली, 2000.
4. राजेश जैन, **भारतीय राजनीति के नये आयाम,** कॉलेज बुक डिपो, जयपुर, 2000.
5. रूपा मंगलानी, **भारतीय शासन एवं राजनीति,** राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 2011.
6. बी.एल. फाड़िया एवं पुखराज जैन, **भारतीय शासन एवं राजनीति,** साहित्य भवन, आगरा, 2016
7. **दैनिक भास्कर,** रोहतक, 20 अक्तूबर 2014.
8. **दैनिक जागरण,** पानीपत, 20 अक्तूबर 2014.
9. **दैनिक ट्रिब्यून,** चण्डीगढ, 17 अगस्त 2014.